

सिद्ध शाबर मन्त्र

SHIDH SHABAR MANTRA



- शाबर मन्त्र शीघ्र प्रभावी होते हैं।
- शाबर मन्त्र सरल भाषा में होते हैं।
- शाबर मन्त्र के प्रयोग अत्यंत सुगम होते हैं।
- शाबर मन्त्र में कोई भी सुधार करने की या अर्थ निकालने आवश्यकता नहीं होती क्योंकि यह मन्त्र

- शाबर मन्त्र में कोई भी सुधार करने की या अर्थ निकालने आवश्यकता नहीं होती क्योंकि यह मन्त्र प्रायः ग्रामीण भाषाओं में पाए जाते हैं।
 - शाबर मन्त्र सरल प्रत्येक भाषा में पाए जाते हैं।
 - शाबर मन्त्र से प्रत्येक समस्या का निराकरण सहज ही हो जाता है।
 - शाबर मन्त्र स्वयं सिद्ध होते हैं।
 - शाबर मन्त्र विशेषतः दो प्रकार के पाए जाते हैं, जिनमें से प्रथम प्रकार के मन्त्रों का तो अर्थ ही समझ में नहीं आता दूसरी प्रकार के मन्त्र अपना पूर्ण मन्तव्य प्रस्तुत करते हैं।
-

- शाबर मन्त्र के साथ कही गई विधि के अनुसार मन्त्र का प्रयोग कीजिए और अपने मित्रों तथा परिवार की समस्याओं का निराकरण कीजिए।
- शाबर मन्त्र जैसे कहे गए हैं वैसे ही पढ़ें और उनके प्रभाव से साक्षात्कार करें।
- शाबर मन्त्र शास्त्रीय मन्त्रों की भाँति कठिन नहीं होते।
- शाबर मन्त्र के अनुसार विशेष वर्ग के लिए नहीं है। अपितु जो भी चाहे प्रस्तुत विधि के अनुसार प्रयोग करके लाभ उठा सकता है।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 1

मुट्ठी पीर

मन्त्र :

बिस्मिल्लाह अर्रहमान निर्ररहीम ।
साह चक् की बावड़ी ।
गले मोतियन का हार ।
लंका सौ कोट समुद्र सी खाई ।
जहाँ फिरे मोहम्मदा वीर की दुहाई ।
कौन वीर आगे चले ।
सुलेमान वीर चले ।
दुर्शनी वीर चले ।
नादिरशाह वीर चले ।

मुट्ठी पीर चले ।
नहीं चले तो हजरत सुलेमान की दुहाई ।
शब्द साँचा ।
पिण्ड काँचा ।
चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

इस मन्त्र को गुरुवार के दिन से रात्रि के समय बबूल के वृक्ष के नीचे बैठ कर इस भांति जपें कि 30 दिन में 100000 जप पूर्ण हो जाए। जप के काल में या जप की पूर्णता पर मुट्ठी पीर हाजिर होंगे उन्हें प्रसन कर लें।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 2

हनुमान

मन्त्र :

ॐ हनुमान पहलवान
वर्ष बारहा का जवान।
हाथ में लड्डू मुख में पान।
आओ आओ बाबा हनुमान।
न आओ तो दुहाई महादेव गौरा पार्वती की।
शब्द साँचा।
पिण्ड काँचा।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि :

इस मन्त्र का अनुष्ठान मंगलवार या शनिवार से प्रारम्भ करें। हनुमान जी को सिन्दूर का चोला, जनुऊँ, खड़ाऊँ, दो लड्डू और ध्वजा चढ़ावें। इसके बाद प्रत्येक मंगलवार को व्रत रखें। लाल वस्त्र धारण करें तथा चन्दन की माला से जपादि कर्म करें। शनिवार को चने तथा गुड़ का वितरण करें। इस मन्त्र की दस मालायें प्रतिदिन जपें। यह कर्म तीन महीने तक करें। सदा पवित्र रहें। हनुमानजी दर्शन देंगे। उस समय जो चाहें माँग लें।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 3

वीरों की जंजीर

मन्त्र :

लाइलाहाइलिल्लाह ।

हजरत वीर की सल्तनत को सलाम ।

वी आजम जेर जाल मश्वल कर ।

तेरी जंजीर से कौन-कौन चले ।

बावन भैरों चलें ।

चौसठ योगिनी चलें ।

देव चलें ।

हनुमन्त की हाँक चले ।

नरसिंह की धाक चले ।

नहीं चले तो सुलेमान के बख्त की दुहाई ।

एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर की दुहाई ।

मेरी भक्ति गुरु की शक्ति ।

फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :

इसकी साधना अकेले ना करें। शुकवार या गुरुवार
के दिन से पश्चिम की ओर मुख करके, सफेद वस्त्र धारण
करके बैठें और दस माला प्रतिदिन जपें। बारह दिन में सिद्ध
हो जायेगा। प्रयोग काल में लोबान जलता रहे। वीर उपस्थित
हों तो वचन में बाँध लें।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 4

हनुमान

मन्त्र :

ॐ नमो देव लोक दिविख्या देवी । जहो बसे इस्माईल योगी ।
छप्पन भैरों । हनुमन्त वीर ।
भूत प्रेत दैत्य को मार भगावें । पराई माया ल्यावे ।
लाडू पेड़ा बरफी सेब सिंघाड़ा डोडा इलायची दाना । तेल देवी काली के ऊपर ।
हनुमन्त गाजै । एती वस्तु मैं चाहि लाव ।
न लावे तो तैंतीस कोटि देवता लावें । मिरची जावित्री हरडे जंगी—हरडे ।
बादाम छुहारा मुफरें । श्रामवीर तो बतावें बस्ती ।
लक्ष्मण वीर पकड़ावें हाथ । भूत प्रेत के चलावें हाथ ।
हनुमन्त वीर को सब कोऊ गाव ।
सौ कोसों का बस्ता लावे ।
न लावे तो एक लाख अस्सी हजार वीर ।
पैगम्बर लावें ।
शब्द साचों ।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :

कहीं निर्जन (उजाड़) स्थान में कोई अंधा कुआं देखें । वहाँ पर शुद्ध मिट्टी में लाल रंग मिलाकर हनुमान जी की प्रतिमा बनावें और उसे सिन्दूर का चोला चढ़ाकर इस मन्त्र का जाप करें । एक माला का जप निशदिन करें और 21 दिन तक इस क्रिया को चलाते रहें । हो सकता है कि रामदूत स्वयं उपस्थित हो जाएं । यदि वे नहीं आए तो सैकड़ों मेघों का गर्जन करते हुए आकाशवाणी होगी । इसे ध्यान से सुनें और यदि कर सकें तो उनसे तीन वचन ले लें ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 5

शौहा वीर

मन्त्र :

सोह चक्र की बावड़ी। डाल मोतियन का हार।

पद्म नियानी नीकरी। लंका करे निहार।

लंका सो कोट समुद्र सी खाई। चले चौकी हनुमन्त वीर की दुहाई।

कौन-कौन वीर चले। मरदाना वीर चले।

सवा हाथ जमीन को सोखन्त करना। जल का सोखन्त करना।

पय का सोखन्त करना। पवन का सोखन्त करना।

लाग को सोखन्त करना। चूड़ी को सोखन्त करना।

पलना को सोखन्त करना। भूत को सोखन्त करना।

पलीत को सोखन्त करना ॥

अपने वरी को सोखन्त करना।

मवत उपात भाकी चन्द्र कले नहीं।

चलती पवन मदन सूतल करे।

माता का दूध हराम करे।

शब्द सांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र का प्रयोग गुरुवार से करके एक माला प्रतिदिन फेरें।

लोबान जलाए रखें। 21 दिन में वीर दर्शन देगा जो चाहे माँग लें।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 6

वीर

मन्त्र :

काली काली महाकाली । इन्द्र की बेटी, ब्रह्मा की साली ।
बालक की रखवाली । काले की जय काली । भैरों कपाली ।
जटा रातों खेलें । चन्द हाथ कैड़ी मठा ।
मसनिया वीर । चौहटे लड़ाक ।
समानिया वीर । बज्रकाया ।
जिह करन नरसिंह धाया । नरसिंह फोड़ कपाल चलाया ।
खोल लोहे का कुण्डा । मेरा तेरा बान फटक । भूगोल बैढान ।
काल भैरों बाबा नाहर सिंह । अपनी चौकी बठान ।
शब्द साँचा फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

किसी एकान्त स्थान में शनिवार या रविवार को रात्रि में जप का शुभारम्भ करें । उस रात यह जप तब तक करें जब तक वीर दर्शन न दें ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 7

कालिका

मन्त्र :

कीं कालिका षोडस वर्षीय जवान
हाथ में खड़ग खप्पड़ तीर कमार।
गले नर मुण्ड माला रहे श्मशान।
आओ आओ माँ कालिके मेरा कहना मान।
नहीं आये कालिका को काल भैरव की दुहाई।
शब्द साँचा फुरो मन्त्र खुदाई।

इस मन्त्र का शुभारम्भ शनिवार की अर्द्ध रात्रि में
निर्वस्त्र होकर करें। इस मन्त्र का लाभ कालिका देवी भक्तों
को ही प्राप्त होगा।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 8

हनुमान

मन्त्र :

अजरंग पहनूं। बजरंग पहनूं।
सब रंग रखूं पास। दांये चले भीमसेन।
बांये हनुमन्त। आगे चले काजी साहब।
पीछे कुल बलारद। आतर चौकी कच्छ कुरान।
आगे पीछे तूं रहमान। घड़ खुदा, सिर राखे सुलेमान।
लेहे का कोट। ताँबें का ताला।
करला हंसा बीरा।
करतल बसे समुद्र तीर।
हांक चले हनुमान की।
निर्मल रहे शरीर।

विधि : हनुमान जी विषयक सभी नियम मानते हुए इस मन्त्र की दस माला प्रतिदिन जपें। 21 दिन पूरे होने पर किसी भी रूप में हनुमान जी आ सकते हैं। श्रद्धा तथा विश्वास से उन्हें जीतें।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 9

हनुमान

मन्त्र :

हनुमान जाग ।

किलकारी मार ।

तूँ हुँकारे ।

राम काल सँवारें ।

ओढ़ सिन्दूर सीता मइया का ।

तूँ प्रहरी राम द्वारे ।

मैं बुलाऊँ, तूँ अब आ ।

राम गीत तूँ गाता आ ।

नहीं आये हनुमाना तो राजा राम,

सीता मइया की दुहाई ।

मन्त्र साँचा फुरै खुदाई ।

विधि : हनुमान जी विषयक पूर्ण नियमों के साथ मंगलवार के दिन से इस मन्त्र का शुभारम्भ करें और पाँच मंगलवार तक करें।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 10

मसान

मन्त्र :

ॐ नमों आठ खाट की लाकड़ी।
मूँज बनी का कावा।
मुवा मुर्दा बोले।
न बोले तो महावीर की आन।
शब्द सांचा फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि : इस मन्त्र के अनुष्ठान से मसान जागता है। इसके लिए सुरा एक बोतल, चमेली के पुष्प, लोबान, छाड़छड़ीला, लौंग, कपूर, कचरी, अतर आटे से बना चौमुखा दीपक लेकर श्मशान में जाएँ। लोबान का धूप करें। चौमुखा दीपक जलाकर रखें। इसके बाद एकाग्रचित होकर यह मन्त्र पढ़ें। कुछ समय पश्चात मसान जग जाएगा और हा-हाकार मचायेगा। आप धीरज रखें और डरें नहीं। अतर के छींटे दें और सुरा का अर्घ्य दें। इसके बाद मसान प्रकट होगा। अब आप चमेली के पुष्पों की वर्षा करते हुए उसका स्वागत करें और शेष सामग्री उसे अर्पित करके प्रणाम करें।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 11

मुहम्मदा पीर

मन्त्र :

ॐ नमों हाँकत युगराज फांटत काया । जिस कारण युगराजा मैं
तोको ध्याया ।

हुंकारत युगराज आया । गाजंत आया । घोरंत आया । सिर के फूल
बखेरंत आया ।

आयर की चौकी उठावंत आया । अपनी चौकी बैठावंत आया ।

और का किवाड़ तोड़ता आया । अपना किवाड़ भेड़ता आया ।

बाँधि बाँधि किसको बाँधी । भूत को बाँधि ।

प्रेत को देव दानव को बाँधी । उड़न्त गड़न्त योगिनी बाँधी ।

चौर चिरणागार को बाँधी । तिरसठ कलुआ को बाँधी ।

चौंसठ योगिनी को बाँधी । बावन वीर को बाँधी ।

द्वार को बाँधी । हाट को बाँधी ।

गले को बाँधी । गिरारे को बाँधी ।

किया को बाँधी । कराय को बाँधी ।

अपनी को बाँधी । परायी को बाँधी ।

मैली को बाँधी । कुचैली को बाँधी ।

पीली को बाँधी । स्याह को बाँधी ।

सफेद को बाँधी । काली को बाँधी । लाली को बाँधी ।

बाँधी बाँधी रे गढ गजनी के महमदा पीर । चलैं तेरे संग सत्तर सौ
वीर । जो बिसरि जाएँ सौ राजा हलाल जाएँ ।

उलटी मार ।
पलटी मार ।
पछाड़ मार ।
धर मार ।
कब्जा चढ़ाय ।
सुड़िया हलाय ।
शीश खिलाय ।
शब्द साँचा ।
फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि : इस मन्त्र को सूर्य ग्रहण के समय किसी नदी के किनारे
निर्जन वन या उपवन में बैठकर जपें तो मुहम्मदा पीर दर्शन देंगे ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 12

बिरहना पीर

मन्त्र :

पीर बिरहना । फूल बिरहना ।

धुँ धुँकार सवा सेर का तोसा । वाय अस्सी कोस का धावा करे ।

सात सौ कुन्तक आगे चले । सात सो कुन्तक पीछे चले ।

छप्पन सौ छुरी चले । बावन सौ वीर चले ।

जिसमें गढ़ गजनी का पीर चले । और की भुजा उखाड़ता चले ।

अपनी भुजा टेकता चले । सूते को जगावता चले ।

बैठे को उठावता चले । हाथों में हथकड़ी गरे ।

पैरों में पैर कड़ा गरे । हलाल माहीं दीठ करे ।

मुरदार माहीं पीठ करे । बलवान नबी को याद करे ।

ॐ नमः ठः ठः स्वाहा ।

विधि : सवा सेर मोहन भोग का हलवा समक्ष रख करके लोबान जलायें । शुद्ध घी का दीप जलाकर सूर्य ग्रहण के समय इसे जपें । बिरहना पीर आएँगे । इन्हें चमेली के सफेद पुष्पों की माला पहनावें और उनसे वार्ता करें ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 13

डाकिनी

मन्त्र :

स्थार की खवासिनी ।

समन्दर पार धाई ।

आव, बैठी हो तो आव ।

ठाडी हो तो ठाडी आव ।

जलती आ ।

उछलती आ ।

न आये डाकिनी तो जालंधर पीर की आन ।

शब्द सांचा ।

पिण्ड कांचा ।

फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि : किसी निर्जन चौराहे पर या अपने निवास पर पूर्णतः निर्वस्त्र होकर आसन पर बैठें । मॉस और मदिरा भोग के लिए रख लें । चर्बी का दीपक जलायें और इस मन्त्र का पाठ करते रहें । जब दस मालायें हो जाएं तो अपने हाथों में पीली सरसों लेकर इस मन्त्र से सिद्ध करके सभी दिशाओं में फेंक दें, और पुनः मन्त्र का जप आरम्भ कर दें और आसपास की सभी डाकिनियाँ दौड़ती हुई आ जाएंगी ।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 14

गौ जोगिन

मन्त्र :

आगारी जो गुरु यागे ।
जोगिन गुरु डण्ड बतियाँ ।
करिया बलईयाँ ।
री जोगन मुख अनरिता ।
गायति रही रतियां ।
गो जोगिन चल इन अकेलियां ।
गो मारो है तालियां ।
गो जोगिन बाँधऊं नजरियां ।
गो जोगिन आ पहियाँ ।
ना आये तो दोहाई मइया बनिता की ।
दोहाई सलिमा पैगम्बर की ।
दोहाई सलाई छू ।

विधि : इस मन्त्र को शुक्रवार की रात्रि में रात भर जपें और सावधान रहें । धूप-दीप जलता रहे । चमेली की पुष्प की माला भी रखें और जैसे ही गौ जोगिन दर्शन दे तो यह माला उसे पहना दें ।

मन्त्र :

ॐ नमो आदेश गुरु को । काला भैरव, काला केश ।
कनो मुन्दरा, भगवा वेष । मार मार काली पुत्र बारह कोस की मार ।
भूता हाथ कलेजी खूँहा । गेड़िया जहाँ जाऊँ भैरों साथ ।
बारह कोस की ऋद्धि लाओ । सोती होय जगाय लाओ ।
बैठी होय उठाय लाओ । अनन्त केशर की भारी लाओ ।
गौरा पार्वती की बिछिया लाओ । गेल्या की रस्सतान मोह ।
कुएँ बैठी पणिहारी मोह । गद्दी बैठा बणिया मोह ।
गृह बैठी बणियानी मोह । राजा की रजवाड़िन मोह ।
महलों बैठी रानी मोह । डाकिनी को । शाकिनी को ।
भूतिनी को । पलीतनी को । औपरी को । पराई को ।
लाग को । लपटाई को । धूम को । धक्का को । पलीया को ।
चौड़ को । चुगाठ को । काचा को । कलवा को । भूत को ।
पलीत को । जिन को । राक्षस को । बैरिनों से बरी कर दे ।
नजरो जड़ दे ताला । इत्ता भैरव न करे तो पिता महादेव की जटा
तोड़ तागड़ी करे । माता पार्वती का चीर फाड़ लंगोट करे ।
चल डाकिनी शाकिनी । चौड़ूँ मैला बाकरा । देऊँ मद की धार,
भरी सभा में दूँ आने में कहाँ लगाई वार । खप्पर में खाय मसान में
लोटे । ऐसे काला भैरों की कुण पूजा मेटे । राजा मेटे राज से जाये ।
प्रजा मेटे, दूध पूत से जाये । जोगी मेटे ध्यान से जाये ।
शब्द साँचा । पिण्ड काँचा । फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि: एक काले रंग का त्रिभुजाकार पत्थर लेकर काले रंग और चमेली के तेल को मिलाकर उसे रंग दे और किसी धरातल पर सीधा खड़ा कर दें। शनिवार की रात्रि में इसके सामने सरसों के तेल का अखण्ड दीप जलायें। दो लौंग रखें, नारियल तथा पान की पूजा रखें। मदिरा का भी प्रबन्ध रखें। अब इसके सामने धूप जलाकर इस मन्त्र का जप प्रारम्भ करें। कम से कम एक माला तो

अवश्य जपें और रात्रि में इसी भाँति पाठ करते रहें। दिन में काले कुत्ते को खीर हलुवा खिलावें। मंदिर में भैरोंजी के दर्शन भी करें। जब भैरों जी को माँस, मदिरा का भोग प्रस्तुत करें और आगे जैसा आप चाहे वैसा करें।

सिद्ध शाबर मन्त्र : 16

भैरव जी

मन्त्र :

ॐ काली कंकाली । महाकाली के पुत्र ।
कंकाल भैरव हुकुम हाजिर रहे । मेरा भेजा रक्षा करे ।
आन बाँध । बान बाँधू ।
फूल में भेजूँ फूल में जाँय । कोठे जी पड़े थर थर काँपे ।
हल हल हले । गिरी गिरी परे ।
उठि उठि भगे । बक बक बके ।
मेरा भेजा सवा घड़ी । पहर सवा ।
दिन सवा । मास सवा । सवा बरस को बावला न करे ।
तो माता काली की शय्या पे पग धरे । वाचा चूके ।
तो उमा सुखै । वाचा छोड़ कुवाचा करै ।
धोबी की नाँद । चमार के कूँड़े में पड़ै । मेरा भेजा बावला न करे ।
तो रुद्र के नेत्र से आग की ज्वाला कढ़ै । सिर की जटा टूट भूमि में
गिरे । माता पार्वती के चीर पे चोट पड़े । बिना हुकुम नहीं मारना ।
हे काली के पुत्र कंकाल भैरव । फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा ।
सत्य नाम आदेश गुरु को ।

विधि : इस मन्त्र का प्रयोग भी पूर्व वर्णित मंत्र के प्रयोग की भाँति
ही है और इसके जप से भी श्री भैरव जी प्रकट होते हैं ।